पश्चिम एशिया संघर्ष ने भारत की ऊर्जाआत्मनिर्भरता के प्रयासों कीअत्यावश्यकता को फिर उजागर किया

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव नेआयातित हाइड्रोकार्बनों पर भारत की गहरी निर्भरता को लेकर चिंताों को फिर से बढ़ा दिया है, जिससे वैश्विक सप्लाई बाधा के कारण उत्पन्न होने वालेआर्थिक जोखिम उजागर हो रहे हैं। यह चुनौती स्ट्रक्चरल है। भारतअपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 87 प्रतिशतआयात करता है, जिससेअर्थव्यवस्था वैश्विक सप्लाई झटकोंऔर कीमतों में उतार-चढ़ाव के प्रतिअत्यधिक संवेदनशील हो जाती है। तेलऔर गैस मिलकर भारत के वार्षिकआयात बिल का लगभग 176अरब डॉलर हिस्सा बनाते हैं, जिससेअर्थव्यवस्था भू-राजनीतिकअस्थिरताों के प्रतिअधिक

प्रभावित रहती है। उद्योग जगत के नेताों का कहना है कि ताजा संकट इस बात की याद दिलाता है कि ऊर्जा सुरक्षा काआर्थिक स्थिरता से गहरा संबंध है। वेदांता के चेयरमैनअनिलअग्रवाल ने सरकार से इस क्षेत्र को तुरंत राष्ट्रीय प्राथमिकता घोषित करने काआग्रह किया है।